IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19543634

ISSN : 3048-6971

आदिवासी विमर्श : एक अध्ययन

Pradeep Kumar (Qualified UGC- NET)
Department of History
Kashi Naresh Govt .P.G.College,Gyanpur,Santravidas Nagar,Bhadohi U.P
Pradeepk3032@gmail.com

शोध सारांश

आदिवासी विमर्श : एक अध्ययन

आदिवासी विमर्श बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में शुरू हुआ अस्मितामूलक विमर्श है। मूलतः यह अस्तित्त्व और अस्मिता का विमर्श है। भारत में आदिवासी मुख्य रूप से झारखंड, छतीसगड, वार्जिलिंग, उहीमा, राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में बहुल संख्या में पाये जाते हैं। इस आलेख में आदिवासी समाज की पीड़ा, संघर्ष, विस्थापन का दर्द, आदिवासी खियों की दशना का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। आदिवासियों के बारे में जानने एवं समझने के लिए उनके बीच जाना बहुत जरूरी है। प्रख्यात आदिवासी लेखिका महाश्वेता देवी कई वर्षों तक आदिवासियों के बीच रही उनके मुख-दुःख का हिस्सा बनी। उनके जीवन और समाज को गहराई से समझने के पश्चात ही आदिवासियों के अनुरूप समस्याओं को अभिव्यक्त कर पाई। इस उत्कृष्ट लेखन कार्य के लिए वे आदिवामी समाज के बीच 'माँ' उपनाम से लोकप्रिय हो गई। महाश्वेता देवी को आदिवासी साहित्य लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पद्मश्री, ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत इनके उपन्यास 'अरण्येर अधिकार' आदिवासी नेता बिरसा मुंडा की गाथा है। ये आदिवासियों के भगवान स्वरूप माने जाते हैं। आदिवासी विमर्श का प्रमुख कारण भारत में शुरू हुई उदारीकरण और मुक्त व्यापार की आवम्बा है। इनकी मूलभूत संपत्ति जनु, जंगल, जमीन पर से आधिपत्य दिकुओं (शहरी लोग) द्वारा छिन लिया गया, जिससे इनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। मजबूरन लोगों को शहर की ओर विमुख होना पड़ा। भूमंडलीकरण के कारण सभी देश एक-दूसरे के करीब आ रहे हैं परन्तु, देश का मूलनिवासी आज भी पहाड़ी जंगलों में रहने के लिए मजबूर है। विकास की कोई सड़क उन तक नहीं पहुँच पाती। शिक्षा, बेरोजगारी, खी का दर्द, भुखमरी, शराब आदि की नमस्या चरम पर है। जिस जल, जंगल, जमीन के सहारे इनका भरण-पोषण एवं सुकून भरा जीवन व्यतीत हो रहा था उस पर भी इन शहरी व्यवसायी की नजर लग गई। अनेक लेखकों, कववित्रियों ने अपनी लेखनी के माध्यम ने उपर्युक्त समस्याओं को स्वर प्रदान की है। इनमें प्रमुख है- वाल्टर नॅगरा, एलिम एक्का, महाश्वेता देवी, निर्मला पुतुल, रमणिका गुप्ता, हरिराम मीणा, महुआ माजी आदि। इनकी रचनाओं में आदिवासियों के 'अस्तित्व' एवं 'स्वर' को प्रमुखता दी गई है एवं उनकी समस्याओं के लिए आवाज उठाई गई है वाल्टर भेंगरा ने झारखण्ड IJCRT25A1370 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org 131

बंसल और वहाँ के जीवन की केन्द्र में रखते हुए 'सुबह की शाम' उपन्यास लिखा। इसे हिंदी का पहला आदिवासी उपन्यास माना जाता है। इसी श्रेणी में एलिग एका का नाम अग्रणी है, जो हिन्दी की पहली महिला आदिवासी कथाकार के रूप में विख्यात है। 'एलिस एका की कहानियों' संकलन में एलिस की कुल छह कहानियाँ शामिल हैं 'जनकन्या', 'दुर्गो के बड़े और एत्मा की की कल्पनाएँ, सलमी, जुगनी और अंबा गाछ 'कोयल की लाडली सुमरी, पंद्रह अगस्त', 'विलचो और रामू' और 'धरती लहलहाएगी, झालो नाचेगी गाएगी। ये कहानियाँ हम सब को आदिवासी समाज के यथार्थ से परिचित कराती है। इनकी कहानी के संदर्भ में उपन्यासकार विनोद कुमार कहते हैं "आदिवासी समाज में गद्यात्मक लेखन के प्रति वैसा रुझन नहीं है, पर साठ के दशक में ही एलिस एका सधी हुई कहानियों लिख रही थीं। उन्होंने समाज और परिवेश को अपनी छोटी कहानियों में समेटने का कठिन कार्य किया है। उनकी कहानियों में आदिवासी समाज के सुख-दुख, उल्लास-आनंद और भविष्य के प्रति आशावादिता नजर कती है। डॉ० माया प्रसाद मानती हैं- एलिस एक्का ने अपने समाज को कज्ञानियों के द्वारा लोगों तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया था। वहीं फादर पीटर पॉल कहते हैं, 'एलिय एका की आपबीती, अनुभवों से निकली कहानियों हैं जो दिल को सुकून देती है।" (1)

एलिस की कहानियों की भाषा आदिवासी हिन्दी है। वे नागपुरी, मगहीं, खोरठा भाषाओं का भी प्रयोग संवादों में करती हैं। समानता, सहअस्तित्व, खी-पुरुष के बीच बराबरी, सामूहिकता आदि जीवनमूल्य का वर्णन एलिस एका की कहानियों की विशेषता है।

शब्द कुंजी: जल, जंगल, भूमि, अधिकार, आंचलिक, आदिवासियों, प्रकृति; धारणा, अस्मिता, उदारता, भूमंडलीकरण, संघर्ष, आदिम जातियाँ। कम्यूनिटी, फ़्लोरिडा, फ़्लामीपन, परदेशी, शराब, रूमानी, उलगुलाना आदि।

प्रस्तावना:-

किसी भी विमर्श के केन्द्र में वर्ग, समुदाय व्यक्ति के अस्तित्व, अधिकार एवं संघर्ष ही प्रमुख होते हैं। आदिवासी विमर्श भी आदिवासी की पहचान, उसके अस्तित्व संबंधी संकटों और उसके विलाप जारी प्रतिरोध का साहित्य है। प्रतिरोध अस्मितामूलक साहित्य की प्रमुख विशेषता है।वस्तुतः यह विमर्श देश के मूल निवासियों के वंशजों के प्रति भेदनाव का विरोधी है। यह जल, जंगल, जमीन और जीवन की रक्षा के लिए आदिवासियों के अधिकार की माँग करता है।

'आदिवासी' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है आदि और वामी। आदि का 'मूल' और बासी का अर्थ 'नि...

(हिन्दी में आदिवासी-विमर्श सबसे नया विमर्ज है। आदिवासी से संबंधित पहले की रचनाजों में उनके अस्तित्व का चित्रण बंशतः ही किया गया है। पिछले डाईतकों के दौरान उदारीकरण एवं वैधिकरण की तेज होती प्रक्रिया के साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हस्तक्षेप में आदिवासियों का जीवन चित्र-भिन्न हो गया। उनके इस संघर्ष में राजसत्ता एवं प्रशासन का हस्तक्षेप बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं कॉर्पोरेट्स के पक्ष में तथा आदिवासियों के विरुद्ध रहा। इस कुशासन के राज में यदि वे अपनी अस्मिता एवं सांस्कृतिक पहचान को अहमियत देते तो उनका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता था। प्रचलित कहावत भी है- 'जिसकी लाठी उसकी भैंस।' लेकिन जो विपरित परिस्थितियों में भी संघर्ष करता है, वही परिवर्तन ला सकता है।(आदिवासियों के संघर्ष भरे इतिहास में जब कभी भी परिवर्तन जब्द सूनने को मिले...पुचक करमा बऔर उसकी प्रिया करनी के माध्यम से पहुंचाने कोशिश की।कहाँ गया वह परदेशी जो शादी का डोंग रचाकरतुम्हारी बहन के साथसाज-दो-साल रहकर अचानक गायब हो गया?आदिवासी विमर्श को कहानी-विधा में उद्घाटित करने की कोशिश की गई है। वाल्टर भँगरा के कहानी संग्रह 'देने का सुख एवं 'नौटती रेखाएँ' आठवें दशक में पीटर पाल एका के प्रकाशित कहानी संग्रह 'खुला आममान बंद दिशाएँ', 'परती जमीन' एवं 'मोन पहाड़ी' आदि महत्वपूरहिन्दी साहित्य में आदिवासी खियों की नाका चित्रण अपेक्षाकृत कम हुआ है। जहाँ कहीं आदिवासी श्री का चिषण हुआ है,बहों हम आदिवासी रखी को मात्र स्वच्चांद यौन की वस्तु, लुटी-पिटी और क्षत-विक्षत रूप में चित्रित किया हुआ ही देखते हैं। इससे आहत होकर डॉ० वीपी केशरी लिखते हैं-"लोगों ने रोमांटिक होकर और गिद्ध, दृष्टि से आदिवासियों पर ज्यादा लिखा है। अनेक बाहरी लेखकों ने तो हमारा अहित करने वालों की उद्धारक और हमारे नायकों को अपराधी चित्रित किया है। उनका लेखन हमारी औरतों के बलात्कार के विना उत्कृष्ट और कलात्मक नहीं होता। "(7)

इसी संदर्भ में बंदना टेटे लिखती हैं "भारतीय साहित्य में आदिवासी महिलाएँ परदेशी के प्रेम में देह नौपती, दाई, आया, सेविका आदि के रूप में मार खाती, बलात्कार भोगती हुई ही दिखाई देती हैं। अस्मिता, म्वशासन और आत्म-निर्णय के अधिकार के लिए संघर्ष करती हुई आदिवासी खियों माहित्य और फिल्मों में एकामिरे में गायव है।" (8)

जिस प्रकार दलित साहित्य में रखी के सवालों को पीछे छोड़ा गया है; इसी कारण अलग से दलित श्री विमर्श की आवश्यकता महसूस हुई और यही मप्न वर्तमान में आदिवासी साहित्य में खी की है। निर्मला पुतुल अपनी कविता में कहते हैं कि 'कुछ पैसे के खातिर अपने ही गाँव के वहन बेटियों को बेचते हैं और लकड़ी की गठरी की तरह गाड़ी में लड़की को लादकर शहर ले जाते हैं। निर्मला पुतुल ने यहाँ आंतरिक शत्रुओं का चित्रण किया है। आज भी आदिवानी वियाँ अपनी अस्तित्व एवं पहचान के लिए संघर्षरत है।

म्पए है कि आदिवासियों में विद्रोह एवं विमर्श की भावना जातिगत भेदों, अंग्रेजी नामकों, जमींदारों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा उनके जल, जंगल और जमीन पर कब्जा एवं उन पर किए गए अत्याचार से उत्पन्न हुई है। बज्ञानता और पिछड़ेपन के कारण उन्हें गताया गया है। आर्थिक तंगी की वजह से जगह-जगह भटकना पड़ा जीवनयापन के लिए। उनकी सभ्यता एवं संस्कृति पर व्यापक प्रहार किए गए। जमींदारों ने जमीन छुड़ाने का भाई मिलीद्वारा उनका किया गया। सभ्य समाज (दिकुओं) के द्वारा तिरस्कृत किया गया। Y धर्मान्तरण

आजभने ही आदिवासियों की रचनाओं में एक प्रकार की जनता साहित्यिक शैली कलात्मकता का अभाव है, पर इसका महत्व इस बात में है कि इसने मुख्यधारा के द्वारा उपेक्षित होने के बावजूद आदिवासियों की व्यचा, अस्तित्व अस्मिता और उनकी दयनीय स्थिति एवं संषयों से समाज को परिचित करवाने की अनवरत कोशिश की।

उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यताओं में सभी और आदिवासी संस्कृति और परम्परायों की छाप है। बावजूद इसके ये तथ्य आम लोगों की जानकारी में बहुत कम हैं। बाजारवाद के नाम पर इस मनमानी का देश सिर्फ आदिवासियों को ही नहीं, संपूर्ण मानव प्रजाति के साथ-साथ अन्य जीव-जन्तुओं पर भी पड़ा है। यह सम्पूर्ण मुष्टि के लिए अपूरणीय क्षति है।

निष्कर्ष:-

स्यार है कि आदिवासियों में विद्रोह एवं विमर्थ की भावना जातिगत भेदों, अंग्रेजी शामकी, जमींदारों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा उनके जल, जंगल और जमीन पर कब्जा एवं उन पर किए गए अत्यावार से उत्पन हुई है। अज्ञानता और पिछड़ेपन के कारण उन्हें सताया गया है। आर्थिक तंगी की बजह में जगह-जगह भटकना पड़ा जीवनयापन के लिए। उनकी सभ्यता एवं संस्कृति पर व्यापक प्रहार किए गए। जमीदारों से जमीन छुड़ाने कानोदेकर ईसाई मिशनरी के किया गया। सभ्य समाज (दिकुओं) के द्वारा तिरस्कृत किया गया। द्वारा उनका धर्मान्तरण

एक कलात्मकता का अभाव है, पर इसका महत्व इस बात में है कि इसने मुख्यधारा के द्वारा उपेक्षित होने के बावजूद आदिवासियों की बचा, अस्तित्व अस्मिता और उनकी दयनीय स्थिति एवं संघर्षों से समाज को परिचित करवाने की अनवरत कोशिश की।

उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यताओं में सभी और आदिवासी संस्कृति और परम्परायों की छाप है। बावजूद इसके ये तथ्य आम लोगों की जानकारी में बहुत कम है। बाजारवाद के नाम पर इस मनमानी का देत सिर्फ आदिवासियों को ही नाहीं, गंपूर्ण मानव प्रजाति के साथ-साथ अन्य जीव-जन्तुओं पर भी पड़ा है। यह सम्पूर्ण मुष्टि के लिए अपूरणीय क्षति है।

संदर्भ-सूची:

1. "आदिवासी साहित्य के लिए आदिवासी दर्शन जानना जरूरी 4 जुलाई 2017, अभिगमन तिथि 4 जुलाई 2017 ब्मृत कड़ियाँ,
2. जपानीस साहित्य एवं संस्कृति, संपादक विशाला शर्मा/दत्ता कोल्हेरे, पृ० 21
3. अस्मिता ही नहीं अस्तित्व का सवाल हरिराम मीणा
4. आदिवासी साहित्य विमर्शः चुनौतियों और संभावनाएँ गंगा गहाय मीणा (फारवर्ड प्रेस, बहुजन साहित्य वार्षिक, अप्रैल, 2013 अंक में प्रकाशित)
5. जनेऊ साहित्याः विविध आयाम, सं० डॉ० रमेश संभाजी कुरे० डॉ. मालती पोडोपंत लिंदे संप्रदाय, पृ० 41
6. जपानीस गाहित्यः विविध आयाम सं० डॉ० रामेन संभाजी कुरे डॉ० मालती पाडोपंत जिंदे/प्रचार्य अविनाश राव जिंदे, पृ० 40-41
7. टेटे, बदनाः आदिवासी साहित्य परम्परा और प्रयोजन, प्यारा, केरकेट्टा फाउडेशन, रांची (झारखंड), संस्करणः 2013, १० 71